International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 168-169

अशोक लव कृत उपन्यास 'शिखरों से आगे' पात्र योजना

संदीप कुमार

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, विभाग हिन्दी, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

पात्र उपन्यासकार के मन परिचायक होते है। 'शिखरों से आगे' उपन्यास आधुनिक भारतीय समाज का जीवन्त चित्रण दर्शाता है। इसलिए लेखक ने पात्र भी उपन्यास 'शिखरों से आगे' के अनुकूल तथा समाज में अपना अति महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए है। विनोद उपन्यास का केन्द्रीयमूत पात्र है। जिसका व्यक्तित्व बहुत आदर्श रूप में चित्रित किया गया है। विनोद बहुत ही होशियार, सरल, मिलनसार और प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति है। शुभी, विनोद के व्यक्तित्व के बारे में बताती है–

'उसने कहां सोचा था विनोद का उसके जीवन में इतना महत्व हो जाएगा। कक्षा में सबको तंग करना, हंसना, मजाक उड़ाना इसी में लगी रहती थी। विनोद में अजीब से आकर्षण था। गेहुंआ रंग, मध्यम कद, गठी देह, आंखों में विशेष चमक। आंखों से झलकता आत्मविश्वास स्वयं में बांध लेने की क्षमता।[1]

वह स्वयं में खोया रहता था। कक्षा की गतिविधियों से मानो उसका कोई संबंध ही न हो। सभी से सामान्य व्यवहार। कभी लगता सभी से अपनत्व भरे सम्बन्ध है तो कभी लगता मानो किसी से कोई रिश्ता ही नहीं है। उसे तंग करने का साहस ही न होता था। कभी छेड़ भी दिया तो भीतर ही भीतर डरती भी रहती थी। वह बहुत कम बोलता था। उसे आश्चर्य होता था। लोग कैसे इतनी देर चुप रह लेते है?''[2]

उपन्यासकार ने विनोद के आन्तरिक व बाह्य व्यक्तित्व का सजीव चित्रण किया है। उपन्यास के पात्र प्रमुख रूप से शहरी संस्कृति व मध्यवर्गीय जीवन से जुड़े हुऐ हैं। विनोद के साथ–साथ शुभी, कृति और स्वामी जी भी मुख्य पात्र है। कृति विनोद के साथ बोर्डिंग स्कूल में अध्यापिका है, वह विनोद के मिलने से पहले नितिन नाम के लड़के से प्रेम करती थी, परन्तु उनका प्रेम भौतिकतावाद की वेदी पर बलि हो जाता है। शैलजा की पार्टी में नरूलाज होटल में नितिन कृति के बारे में बताता है –

''देखो! क्या नाम बताया था शैलजा ने ?.....हां! कृति ! ....शैलजा की इन सारी सहेलियों में से मैंने तुमसे ही ऐसा क्यों कहा ? कुछ सोच समझकर ही न ! यू नो, आई एम एक्सपर्ट इन फेस रीडिंग। चेहरा देखकर मन की बात जान जाता हू। विचारधारा जान आता हूं। तुम सबसे अलग हो। रियली जीनियस। इसलिए कहा था। जहां तक दोस्ती की बात है, यह तो करोगी तभी पता चलेगा।''[3]

उपन्यास का एक बड़ा हिस्सा शिक्षा परिसर पर आधारित है और शिक्षा सम्बन्धी समस्याएं उपन्यास में पर्याप्त स्थान घेरती है। उपन्यास में शिक्षा के गिरते स्तर तथा विद्यार्थियों पर पुस्तकों तथा परीक्षाओं के बढ़ते बोझ के कारण विद्यार्थी आत्महत्या तक कर लेते है। शंकर झा जो बोर्डिंग स्कूल का विद्यार्थी है, परीक्षा खराब होने के कारण आत्महत्या कर लेता है। उसके बारे में विनोद बताता है –

''हंसमुख, शरारती, मस्त रहने वाला विद्यार्थी था। ठीक कक्षा में छात्रावास में आया था। देखते–देखते इतना बड़ा हो गया! दसवीं की बोर्ड की परीक्षाएं आरम्भ हुई। प्रातः उसके चरण–स्पर्श करने आता था। गणित की परीक्षा थी। प्रातः आया। चरण–स्पर्श करके बैठ गया। घबराया हुआ बहुत डांटेंगे। मेरी तैयारी नहीं हुई। अच्छे अंक नहीं आए तो सब क्या कहेंगे।''[4]

''डिनर के समय शंकर डाइनिंग टेबल पर न था। हाउस कैप्टन को उसे बुलाने के लिए भेजा। वह उलटे पांव दौड़ा आया था। उसकी बात सुन वह उछल पड़ा था। डाइनिंग हॉल से भागते हुए शंकर झा के कमरे में पहुंचा। वह पंखे से लटक रहा था। उसे नीचे उतारा। उसके गले में बंधी रस्सी खोली। उसके दिल की धड़कनों को कान लगाकर सुना। धड़कनों का अस्तित्व न था। नर्सिंग सिस्टर भी आ गयी थी। उसे अस्पताल ले गये।''[5]

उपन्यास में आधुनिक समाज का जीवन्त चित्रण किया गया है। आजकल सभी लोग अपने कार्य में व्यस्त रहते हैं तथा तेजरहित हो गए है। शुभी बोर्डिंग स्कूल के अध्यापक अध्यापिकाओं के बारे में बताती है –

''घंटी बज गयी। डायरी पकड़े, कॉपियों के ढेर उठाए अध्यापिकाएं आने लगीं। रंग–बिरंगी साड़ियों में लिपटी, मेकअप की परतें जमाए, चहकती अध्यापिकाओं के आते ही स्टॉफ रूम चहक उठा। अध्यापक भी आने लगे, प्रोढ़ता भरे बुझे–बुझे चेहरों वाले, बुझी–बुझी आंखों वाले। इनके मध्य विनोद कैसे रहता होगा ?''[6]

आशुतोष विनोद के साथ बोर्डिंग स्कूल में फाईन आर्ट का अध्यापक होता है। जो अपनी कला में निपुण है तथा अपनी कला से बहुत प्रेम करता है। उपन्यासकार आशुतोष के चरित्र के बारे में बताते हैं।

''आशुतोष फाईन–आटर्स का विभागाध्यक्ष था। पेंटिंग्स में मास्टर्स डिग्री लेकर सीधे इसी स्कूल में आ गया था। तैल चित्रों में उसकी गहरी पकड़ थी। राजधानी के कला जगत में उसकी विशिष्ट पहचान थी। 'सृजन' संस्था का सचिव था। संस्था की ओर से उसने कई कलाकारों के चित्रों और मूर्ति शिल्पों की प्रदर्शनियां आयोजित की थी। उसके अपने मित्रों की प्रदर्शनियां चंडीगढ़, दिल्ली, कलकत्ता और बम्बई में लग चुकी थी। विनम्र और मितभाषा था। स्कूल में विनोद के अतिरिक्त और किसी से अधिक बातचीत नहीं करता था।''[7]

लेखक ने स्वामी अखिलानन्द अद्भुत प्रतिमासम्पन्न व्यक्ति है। वे लोगों को जीवन स्थिर करने तथा भारतीय संस्कृति की रक्षा करने के बारे में उपदेश देते है। वे लोगों को आधुनिकता से अध्यात्मवाद की ओर अग्रसर करने का बहुत प्रयत्न करते है, तथा वे शिक्षा के स्तर में सुधार लाने के लिए विनोद को उत्साहित करते है। आलोकानंद संस्थान के लिए आर्थिक सहायता भी करते है। शुभी के बुलाने पर विनोद, शुभी के घर स्वामी जी से मिलने जाता है। वह पहली बार स्वामी जी से मिलता है तो –''वह कार से उतरा। स्वामी जी ड्राइंग–रूम में बैठे थे। लगभग पचपन साठ वर्ष के रहे होंगे। गौर वर्ण, मुख पर तेज, दमकता माथा, अधपके बाल, अधपकी दाढ़ी। प्रथम दृष्टि में ही आकर्षित कर लेने वाला व्यक्तित्व'' ।[8]

कहा जा सकता है कि अशोक लव के उपन्यास के पात्र एक ओर जहां समाज के यथार्थ भाव–बोध को प्रस्तुत करते है तो दुसरी ओर समाज का आधुनिकता से अध्यात्मवाद की तरफ मोड़ने का भरसक प्रत्यन करते है तथा समाज से बुराइयों को मिटाकर स्वच्छ समाज बनाने के लिए ऐसे स्कूलों का निर्माण करवाना चाहते है। जिसमें बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ नैतिक शिक्षा भी दी जाए। जिससे स्वच्छ समाज तथा राष्ट्र की नींव सुदृढ़ हो।

उपन्यास में बाल–मनोविज्ञान, स्त्री चरित्र, सिनेमा का प्रभाव शिक्षा में दूरदर्शन, प्राइवेट चैनलों पर अश्लीलता का प्रदर्शन एकाकी परिवारों में वैवाहिक सम्बन्धों की टूटन के भावुक कारणों की ओर बड़ी गहराई और धैर्यता से अशोकलव का उद्देश्य ध्यान आकर्षित करवाना है। प्राइवेट चैनलों पर अश्लीलता तथा नग्नता के संबंध में कृति कहती है –

''टेलीविजन ऑन करके बैठ गयी। वहीं भौंड़े नृत्य। अश्लीलतापूर्वक अंगो का प्रदर्शन। उत्तेजनापूर्वक नृत्य। वह चैनल बदलती है। रूखे–रूखे कार्यक्रम। राजनेताओं के कच्चे चिट्ठे और हड़ताल, सब्जियों के भाव बढ़े। आज कैसा दिन चढ़ा था।''[9]

यद्यपि 'शिखरों से आगे' उपन्यास का एक बड़ा हिस्सा शिक्षा परिसर पर आधारित है, और शिक्षा संबंधी समस्याएं उपन्यास में प्रर्याप्त स्थान घेरती है, फिर भी इस उपन्यास का मुख्य प्रवाह काम संबंधों के जुड़ने और टूटने से संबंध है। विनोद, शुभी और नितिन कृति के प्रेम सम्बन्ध भौतिकतावादी दृष्टिकोण की वेदी पर बलि हो जाते है। इस उपन्यास में आशुतोष अलका, अखिलेष, सुधा, कृष्णकान्त–नीरजा आदि दम्पति विवाह सूत्र में बंधकर भी अलग अलग रहते है। यदि पति–पत्नि में से कोई एक दैहिक सुख को ही सब कुछ मान लेता है तो फिर सम्बन्धों में तनाव और अन्ततः टूटना अनिवार्य है। नितिन की पत्नी पाश्चात्य जीवन मूल्यों के प्रभाव में यौनशुचिता को दकियानुसी मानती है। अलका कर्नल की वासना के जाल मे फंसी हुई है। कृष्णकान्त प्रमोशन के लिए पत्नी को बोस के सामने परोस देता है। ये सभी कार्य उपभोक्तावादी पूंजीवादी मानसिकता सेप्रेरित संचालित है। यह आकस्मिक नहीं है कि उपन्यासकार ने इन विकृतियों का उद्घाटन करते हुए परस्पर विश्वास और प्रेम की आवश्यकता जतायी है ''पंड़ित ने दो चार मन्त्र पढ़ दिए। पति पत्नी बन गए। इससे आपसी प्रेम नहीं हो जाता। प्रेम शनैः शनै पनपता है। उसका आधार विश्वास होता है, त्याग होता है।[10] यदि बाद मे विनोद कृति और आशुतोष प्रियंका का उनका दाम्पत्य सुदृढ़ प्रेम की नींव पर टिका हुआ है।

विनोद के जीवन में एकाएक भारी परिवर्तन आता है और साधु महात्माओं पर यकीन न करने वाला विनोद शुभी के माध्यम से स्वामी अखिलानंद के सम्पर्क में आता है जो विनोद को तेजी से प्रभावित करते है। उसके व्यक्तित्व में जो अजब उजा है, छटपटाहट है, वे उसे देश सम्मान के लिए कुछ करके आगे आने का आह्वान करते है और देश समाज के निर्माण में आग्रणी भूमिका निभाने के लिए आमन्त्रित करते है। स्वामी जी विनोद के सारे आर्थिक उत्तरदायित्वों का भार वह करने का वादा करते है और इस प्रकार देश के लिए संस्कारवान पीढ़ी, विद्यालयों के माध्यम से तैयार करने का प्रारूप बनाकर शिक्षा व्यवस्था में आमूल परिवर्तन की योजना को मूर्तरूप देते है। इस प्रकार उपन्यासकार ने उपन्यास के माध्यम से समाज की ओर आसपास की विसंगतियों पर खुलकर कलम चलाई है। लेखक के मन में देश के लिए और समाज के लिए जो चिन्ता है उपन्यास 'शिखरों से आगे' सफल उपन्यास है। इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य शिक्षण संस्थाओं और शिक्षा नीति की बुनियादी समस्याओं का सार्थक चित्रण है।

विनोद के जीवन में एकाएक भारी परिवर्तन आता है और साधु महात्माओं पर यकीन न करने वाला विनोद शुभी के माध्यम से स्वामी अखिलानंद के सम्पर्क में आता है जो विनोद को तेजी से प्रभावित करते है। उसके व्यक्तित्व में जो अजब उजा है, छटपटाहट है, वे उसे देश सम्मान के लिए कुछ करके आगे आने का आह्वान करते है और देश समाज के निर्माण में आग्रणी भूमिका निभाने के लिए आमन्त्रित करते है। स्वामी जी विनोद के सारे आर्थिक उत्तरदायित्वों का भार वह करने का वादा करते है और इस प्रकार देश के लिए संस्कारवान पीढ़ी, विद्यालयों के माध्यम से तैयार करने का प्रारूप बनाकर शिक्षा व्यवस्था में आमूल परिवर्तन की योजना को मूर्तरूप देते है। इस प्रकार उपन्यासकार ने उपन्यास के माध्यम से समाज की ओर आसपास की विसंगतियों पर खुलकर कलम चलाई है। लेखक के मन में देश के लिए और समाज के लिए चिन्ता है।

निष्कर्ष

पात्र योजना की दृश्टि से उपन्यास 'शिखरों से आगे' सफल उपन्यास है। इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य शिक्षण संस्थाओं और शिक्षा नीति की बुनियादी समस्याओं का सार्थक चित्रण है। शिखरों से आगे उपन्यास में बड़ी ही धैर्यता से मानवीय संबंधों के साथ–साथ समर्पण भाव–बोध पर नए अर्थो के वितान फैलाए है। यह आवश्यक नहीं रह जाता कि प्रत्येक व्यक्ति को सम्बन्धों के आधार पर नाम और रिश्तों में बांध कर ही देखा जाता रहे। विविध परिस्थितियों में जीते हुए भी व्यक्ति को लेखक ने बड़ी ईमानदारी से मानवीय भावुकता को अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ गर्थ

1. अशोक लव कृत उपन्यास 'शिखरों से आगे' पृ0.82
2. अशोक लव कृत उपन्यास 'शिखरों से आगे' पृ0. 80
3. अशोक लव कृत उपन्यास 'शिखरों से आगे' पृ0.43
4. अशोक लव कृत उपन्यास 'शिखरों से आगे' पृ0.161
5. अशोक लव कृत उपन्यास 'शिखरों से आगे' पृ0. 177
6. अशोक लव कृत उपन्यास 'शिखरों से आगे' पृ0.161
7. अशोक लव कृत उपन्यास 'शिखरों से आगे' पृ0.56
8. अशोक लव कृत उपन्यास 'शिखरों से आगे' पृ0.74
9. अशोक लव कृत उपन्यास 'शिखरों से आगे' पृ0 79
10. अशोक लव कृत उपन्यास 'शिखरों से आगे' पृ0 67